

॥ श्रीन ५ वा ज अतीष्ट
परमपुत्र इतमस्का
र करीत्रास्वनी आदि
विघ्न उपसमावात्तणी
कल्प्यस्तुदिविचंद्र
नई ॥ ३ ॥ अथमपिणी
नउचउघउ अरउतेका
ला जिण सम विद सम
इ देव लोकि पुफोत्र
विमानधकी (वर्षदि

एतन्ना श्री संदेह विषोषध्या क्रियते धर्ममरुणा मया र्योयं मुक्ते धी ल्या क्व विप्रणिहितै षिणारण ॥ नमस्कार ऊवउ उवाइशो
नमस्कार ऊवउ अरदंततणी नमस्कार ऊवउ सिधंततणी नमस्कार आचार्यतणी
ऊवउ

॥ ६ ॥ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आर्याणं नमो उवआयाणं नमो लोया सवसा क्त
हालं दीप्रमुष एपाठि नमस्कार मत्रवचन पाप प्रणासकगमा इव्यतद्व्यादिक वलीसधलामाहे पहिलउप चावतमोगलक्य तिणकाल
सर्वसाधुतं लउकहउ काय संबंधासधली नउ उणद्वार ॥ मांगलिक्य ॥
परमपुत्र ऊवउ एनवकार ॥ ई

रणं ए सोपंचतमोकारा सधं पावपणसणो मंगलाणं वसखसिं पठमं हवशं गलं ॥ यातेणं क
तिणई समयइं तपनउकर समग्रिणमर्यादि कर्मरूपव पक हस्तोत्रराउत्रराफा नेजिमकआ हास्तोत्ररा इउत्रराफालुगुनीइं
रणद्वार गुणसहित यरीनाजयुषकी ल्या लगुनीनषउक्तआ तिमकहइं ॥ प्राणितउफोत्ररविमानधकीचव्या

लणं एतणं समएणं समएणं नै गवं महावीर पंचहठत्रेदाळा तं ऊहा ॥ हठुत्ररा हिं चुरावइ
ववीनइं देवा गर्तप हस्तोत्ररा इउत्ररा इवानंदीनीक बीजइं संकमाया हस्तोत्ररा इउत्ररा जाया हस्तोत्ररा इउ इव्यतमुं ह्त्तुआक
नंदातीकूषइं एणइं उपना फालगुनीनषउक्त ॥ षडं एकगरत्तधकी ॥ गर्श फालगुनीनषविइं त्रराफालुगुनीयइं उतावत्तमुंड इकिरी

त्रा गश्च वक्रं तं हठुत्ररा हिं गश्चा उगश्च सा हरिया हठुत्ररा हिं जाणै हठुत्ररा हिं मुंडे त वित्रा ॥
गृहवासधकी अरणगारपणइंसा प्रकषिक्तआ हास्तोत्ररा इउत्ररा अनंतार्धविष मधला न्यानमा निर्वाघात औघात आवगरिहितध्याय ऊक्त
धुपणइं ॥ ४ फालगुनीनषवि यजंती अतंत हउत्रमसर्वत्रिम ॥ कउकधादिकरहित ॥ कपणाजंती ॥ सक

आगारा उअणगारियं पवइणं हठुत्ररा हिं अणंते अणुत्ररा निवाघाण निरावरणा क
नार्धयाहकप प्रतिघणसर्व मधइंरहितकेवलउ दउनि उपतउ स्वातिनऊवमाहे ॥ परिनिर्घतमोषियजतात्तगवंत ॥ हिवविस्तरवाचन
गाजंती ॥ ज्ञानआपणाअगतिणसहित ॥ एकलउ न्यान इउइं इइंकल्यालिक

सि एणं पडि पुं सौं कवल वरं गदं सणे समुपस्य ॥ साइण्य परिनिघुपतयव ॥ यातेणं क
एणमा संबंधीवइं माता माहलानीपरि ॥ अथ शोषअवतो धरूपन्या नकुद वाइं जिमवचनना
महि लोभसाधवाचनाइं पक ल्या एणकक द्वापउइं मध्यमवाचनोइं ॥ महि पकसा ॥ उषजू आरदेषइं सासा न्यावतोस्तु पंचनादिकतेइं ॥

॥ ६ ॥ ३ पाठा चउसति
इं ५ नी की धी प्रजानं
योगते अरदंता आत्क
मरुपवयरी नइं हणइं
ते अरिहंता कर्मरूपय
बाजल स्मकरणजंती
संसारमाहे नही अवत
रइंते अरुदंत एहवाअ
रदंत ॥ ७ ॥ कर्मरूपय
विषय करी (माहगया

ते सिद्ध तियां सिधांताए
॥ न्यानाचारदइं निचा
रचारित्राचारतपचार
वीर्याचार पप्रकारआ
चार आपपालेइं अने
रा नइं उपदिसइं तेआ
चार्य तियां तणी अथ
वाजिणरउअंतनही